श्रीमद्भागवत

- ☐ भागवत में १८००० श्लोक तथा १२ स्कन्ध हैं
- ☐ इन १२ स्कन्धों में ३३५ अध्याय हैं

प्रथम स्कन्ध में १९ अध्याय	द्वितीय स्कन्ध में १० अध्याय	तृतीय स्कन्ध में ३३ अध्याय
चतुर्थ स्कन्ध में ३१ अध्याय	पंचम स्कन्ध में २६ अध्याय	षष्ट स्कन्ध में १९ अध्याय
सप्तम स्कन्ध में १२ अध्याय	अष्टम स्कन्ध में २४ अध्याय	नवम स्कन्ध में २४ अध्याय
दशम पूर्वार्ध में ४९ अध्याय	दशम उत्तरार्ध में ४१ अध्याय	एकादश स्कन्ध में ३१ अध्याय
द्वादश स्कन्ध में १३ अध्याय	= कुल ३३५ अध्याय	

सप्ताह पाठ

- ☐ इस सम्पूर्ण भागवत के पाठ को सात दिन में करने को सप्ताह कहते हैं।
- ☐ माहात्म्य का पाठ तथा पीठ पूजन आदि सात दिन में शामिल नहीं है।
- ☐ यह पहले दिन होता है, दूसरे दिन से मध्याह्न तक पाठ तथा अपराह्ण में कथा कही जाती है।
- ☐ जिसका नियम इस प्रकार है—

आसूर्योदयमारभ्य सार्धं त्रिप्रहरान्तिकम्। वाचनीया कथा सम्यक् सावधानतयाऽनिशम्॥
मध्यं सुखकरं कृत्वा स्पष्टार्थम् विरलाक्षरम्। कथा विरामः कर्तव्यो मध्याह्ने घटिका द्वयम्॥

- ☐ प्रतिदिन कितना पाठ करना चाहिए—इसमें कई भेद हैं, पृथक्-पृथक् कामनाओं के लिए पृथक्-पृथक् विधि है, किन्तु सामान्यतया दो विधियाँ ही प्रचलित हैं।

प्रथम विधि : कौशिक संहिता के अनुसार—

मनुकर्दम संवाद पर्यन्तं प्रथमेऽह्नि।
ऋषभाख्यान पर्यन्तं द्वितीये दिवसे वदेत्।
तृतीये दिवसे कुर्यात् सप्तमं स्कन्ध पूर्वकम्।
कृष्णाविर्भाव पर्यन्तं चतुर्थेऽह्नि वाचयेत्।
रुक्मिण्युद्वाह पर्यन्तं पंचमेऽह्नि वदेत् सुधीः।
श्री हंसाख्यान पर्यन्तं षष्ठेऽह्नि वाचयेत् ध्रुवम्।
सप्तमे दिवसे कुर्यात् श्रीभागवत पूरणम्॥

द्वितीय विधि : कृत्यसार समुच्चय के अनुसार—

आद्ये हिरण्याक्षवधं द्वितीये भरतावधि।
तृतीये त्वब्धिमथनं चतुर्थे कृष्ण जन्म च।
पंचमे रुक्मिणीग्राहं षष्ठे चोद्धव संज्ञकम्।
सप्तमेऽह्नि समाप्तिः स्यात् सप्ताहं मनुरब्रवीत्॥

☐ अन्तिम दिन : गीता तथा विष्णुसहस्रनाम का पाठ भी करना चाहिए।

विरक्तश्चेद् भवेच्छ्रोता गीता वाच्या परेऽह्नि।
गृहस्थश्चेत्तथा होमः कर्त्तव्यः कर्मशान्तये।
गीतापाठो विरक्ते मुख्योऽपिकृतहोमस्य गृहस्थस्यापि श्रवणेयुक्त
इव भाति गृहस्थस्यापि गीतापाठस्य नित्यत्व दर्शनात्॥

जप विधि : सप्ताह में विघ्न नाशन हेतु जप का विधान है।

☐ कम से कम दो ब्राह्मणों द्वारा गणेश जी तथा द्वादशाक्षर मन्त्र का जप कराना चाहिए।

सप्ताह के लिए शुभ मास :

☐ आश्विन-कार्त्तिक-अग्रहण-माघ-वैशाख = सर्वोत्तम

☐ फाल्गुन-जेठ = मध्यम ☐ पौष-चैत्र = त्याज्य ☐ आषाढ़-भाद्रपद = शुभ

☐ श्रावण में शुक्ल पक्ष की नवमी को पूर्णिमा तक भी शुभ फलदायक है।

शुभ समय

☐ मलमास, गुरु-अस्त, शुक्रास्त, सिंहस्थ-मकरस्थगुरु का समय तथा शनि-मंगल का दिन छोड़कर शुभ मुहूर्त में शुभ लग्न में—सप्ताह प्रारम्भ करना चाहिए।

शुभ नक्षत्र —

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी, श्रवण, घनिष्ठा, मृगशिरा तथा पूर्वाभाद्रपद उत्तम हैं।

शुभ तिथि — द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी, द्वादशी उत्तम है।

शुभ दिन — सोम-बुध-गुरु-शुक्र।

चन्द्रबल — वक्ता और श्रोता का चन्द्रबल ठीक हो।

शुभ लग्न — लग्न में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो। केन्द्र अथवा त्रिकोण में शुभग्रह उत्तम होता है।

अग्निवास ☐ पाठ मुख्य होने तथा कुण्डनिर्माण गौण होने से सप्ताह में हवन के लिए अग्निवास नहीं देखना चाहिए।

मण्डप निर्माण ☐ सप्ताहश्रवण जीवन का सबसे बड़ा यज्ञ कहा गया है अतः इसमें मण्डप निर्माण की विधि भी शास्त्रों में वर्णित है। कुछलोग महामण्डप बनाते हैं तथा कुछ लोग छाया-मण्डप बनाते हैं। यह शक्ति- सामर्थ्य पर निर्भर है, जहाँ सविधि मण्डप का निर्माण नहीं होता, घर के भीतर ही सप्ताह होता है, वहाँ व्यास आसन को ही चंदवा-चांदनी बांधकर मण्डप जैसा बना देते हैं।

महामण्डप ☐ महामण्डप निर्माण ठीक उसी प्रकार होता है, जैसा यज्ञ-याग में बनता है।

छाया मण्डप ☐ छाया मण्डप का निर्माण विवाह-उपनयन के मण्डप जैसा होता है।

मण्डप भूमि ☐ मण्डप की भूमि शुद्ध-समतल होनी चाहिए। १६-१८ हाथ का मण्डप उत्तम, १२-१४ हाथ का मध्यम तथा १०-१२ हाथ का मण्डप अधम कहा गया है।

- श्रोता के हाथ से उत्तम स्थान नाप कर भूमिपूजन आदि कर के गढा खोदे, मण्डप बनावें।
- मण्डप के चारों ओर २ हाथ ८ अंगुल चौड़ा चार द्वार बनावें।
- केला के खम्भे से तथा वंदनवार आदि बांधकर द्वार सजा दे।
- झंडी-झंडा-पताका-ध्वजा आदि से अलंकृत कर दें।
- ऊपर करवी या सरपत या शुद्ध तृण से छा देना चाहिए।
- मण्डप पूजन विधि के अनुसार मण्डप तथा चारों द्वारों की पूजा कर दें।

जवा बोना

- मुख्य कलश के पास शुद्ध जवा बो देना चाहिए।
- कहीं-कहीं आचार्य पीठ के पास मिट्टी के पात्र में जवा बोते हैं।
- जितनी सुन्दर जई उत्पन्न होगी उतनी ही वंशवृद्धि होगी—ऐसा वचन शास्त्रों में वर्णित है।

अवभृथ स्नान

- कथा की समाप्ति के बाद वक्ता-श्रोता सब मिलकर इस जई को ले जाकर नदी तालाब में सिराते हैं और स्नान करते हैं।

बैठने के नियम

- वक्ता तथा श्रोता के लिए बैठने का नियम दो प्रकार का है—

- वक्ता (कथावाचक) पूर्वमुख; यजमान (मुख्य श्रोता) उत्तर मुख।
- अथवा—वक्ता उत्तर मुख, श्रोता पूर्व मुख रहे।

तुलसी वृक्ष

- प्रधान पीठ (शालिग्राम मूर्त्ति) के पास तुलसी का वृक्ष किसी गमला या मिट्टी के पात्र में—लाकर रख देना चाहिए और प्रतिदिन उसकी भी पूजा करनी चाहिए।

शंख-घंटा-घड़ियाल

- भगवान की मूर्त्ति के पास शंख-घंटा-घड़ियाल आदि भी रखना चाहिए और नित्य इसकी पूजा करने के बाद ही बजाना चाहिए।

आयुध पूजन

- कुछ लोग प्रधान पीठ पर भगवान श्रीकृष्ण-बलराम के आयुधों का भी आवाहन-पूजन लिखते हैं।

इस पुस्तक में

- इस प्रकार देशाचार-कुलाचार की वजह से सप्ताह विधि के विविध स्वरूप दिखाई पड़ते हैं, इस पुस्तक में शास्त्रसम्मत विधियाँ दी गयी हैं, शेष अपने कुलाचार के अनुसार करना चाहिए।

नियम पालन

- सप्ताह में वक्ता तथा श्रोता को निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए— शय्या शयन, दाल, मधु, तैल, गरिष्ठ भोजन, काम-क्रोध-लोभ-मद-मत्सर आदि का त्याग।

☐ भूमि शयन, लघु-आहार, एक बार भोजन, गुरु-विप्र में भक्ति, फलाहार भगवन्नाम संकीर्तन करना चाहिए।

☐ उपवास भी नहीं करना चाहिए, रजस्वला स्त्री का स्पर्श निषेध है: म्लेच्छ, पतित, व्राजक का मण्डप में प्रवेश निषिद्ध है। सभी कुटुम्बी जनों को आमन्त्रित करना चाहिए।

☐ ऐसी मान्यता है कि निम्न स्कन्धों के निम्न अध्यायों पर विराम नहीं करना चाहिए:

स्कन्ध — अध्याय	स्कन्ध — अध्याय
१ — १,८,१०,११,१६	७ — १,४,६
२ — ३,८	८ — १,२,८,१०,२१
३ — १,७,१०,१८,२०,२३	९ — १,४,१०,१५
४ — १,३,१०,१७,१८	१० — १,९,१०,२२,२९,३०,६२,७७
५ — ५,१३	११ — १०,२२,६०
६ — ६,१०	१२ — ९

श्रीमद्भागवत सप्ताह पूजन विधि

☐ सप्ताह पाठ प्रारम्भ करने से एक दिन पहले—

☐ सर्वप्रथम नित्यकृत्य से निवृत्त होकर—शुद्ध आसन पर दक्षिण भाग में पत्नी को बिठा कर स्वयं पूर्वमुख बैठ कर पूजन प्रारम्भ करें—

☐ पवित्र - आचमन - पवित्रीधारण — "वेदीपूजनविधि" के अनुसार।

☐ स्वस्तिवाचन - मंगलश्लोकपाठ — वेदीपूजनविधि के अनुसार करें।

☐ इसके बाद प्रतिज्ञा संकल्प करे —

— दाहिने हाथ में कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर —पत्नी के हाथ नीचे लगा रहे—निम्न संकल्प पढ़े—

प्रतिज्ञा संकल्प—

हरिः ओम् तत्सद् अद्य श्रीमहाभागवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे—आर्यावर्त्ते श्री विष्णु प्रजापतिक्षेत्रे वैवस्वत मनुभोग्यैक सप्ततियुग चतुष्टयअन्तर्गत—अष्टाविंशति मे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे बौद्धावतारे यथानाम संवत्सरे यथायने सूर्य यथाऋतौ च मासानामुत्तमे मासे महामांगल्यप्रदेमासे··· मासे··· पक्षे···

तिथौ··· वासरे यथानक्षत्रे यथाराशिस्थिते सूर्ये यथा-यथाराशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु यथालग्न मुहूर्त योग करणान्वितायाम्-एवं ग्रहगुण विशेषण-विशिष्टायां शुभ पुण्य पर्वणि श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तिकामः··· गोत्रः··· नामाऽहम् [सपत्नीकोऽहम्] स्वकीय-परिवारस्य च जन्म लग्नतो वा दुस्थानगत ग्रहजन्य सकलारिष्ट निवृत्तये-दीर्घायुष्य- सततारोग्यता वाप्तये-पूर्वातीत अनेक जन्म संचित अखिल दुष्कृत निवृत्ति पुरस्सर-ऐहिक- आध्यात्मिकादि विविध ताप-पाप-आपनोदार्थम् दशाश्वमेधयज्ञजन्य सम्यग्-इष्ट-राजसूययज्ञ सहस्र पुण्य सम पुण्य-चन्द्र सूर्य ग्रहण कालिक-बहुब्राह्मण सम्प्रदायक सर्व शस्य पूर्ण-सर्वरत्नोपशोभित महीदान पुण्य प्राप्तये च श्री गोविन्द चरणारविन्द युगले - निरन्तरम्-उत्तरोत्तरमेधमान निस्सीम प्रेमोपलब्धये- तदीय परमानन्दमय गोलोक धाम्नि नित्य निवासपूर्वक-तत्परिचर्या रसास्वादन सौभाग्य सिद्धये च ब्राह्मण वदनार विन्दात् श्रीकृष्ण वाङ्मय मूर्त्तभूतं श्रीमद्भागवतम् - अष्टादश पुराण प्रकृतिभूतं च सप्ताहयज्ञ रूपतया श्रोष्यामि। प्राप्स्यमानेऽस्मिन् सप्ताह यज्ञे विघ्नपूग निवारण - पूर्वकं यज्ञ रक्षाकरणार्थम्-गौरी गणपत्यादि सहित नवग्रह -षोडशमातृकादीनि स्थापनं - पूजनञ्च - स्वस्ति - पुण्याहवाचनपूर्वकं नान्दीश्राद्धं सप्तचिरजीवित पुरुष पूजनं - सर्वतो - भद्रमण्डलस्थ देवकलशादि - अर्चन पुरस्सरं श्री लक्ष्मीनारायण - शालग्राम-नर - नारायण - गुरु - वायु - सरस्वती - शेष - सनत्कुमार - सांख्यायन - पराशर- बृहस्पति-मैत्रेय - उद्धव - त्रयारूणि - कश्यप - रामशिष्याकृत व्रण - वैशम्पायन - हारीत- नारदादि पूजनं चाधारपीठ - पुस्तक - व्यास - पूजनं च यथालब्धोपचारैः करिष्ये।

- ☐ **इसके बाद—वेदी पूजन पद्धति के अनुसार—**
- ☐ गौरी-गणपति-कलश स्थापन-पूजन
- ☐ पुण्याहवाचन-रक्षाविधान-आचार्यवरण
- ☐ अविघ्नपूजन—मण्डप तोरण पूजन - पंचगव्यकरण
- ☐ षोडशमातृकापूजन-सप्तस्थलमातृका-घृतमातृका पूजन
- ☐ वास्तुपीठ पूजन-चतुःषष्ठियोगिनी पूजा
- ☐ वसोर्धारा-आयुष्यमन्त्रजप-नान्दीमुखश्राद्ध
- ☐ नवग्रह स्थापन-अधि-प्रत्यधिदेवता पूजन
- ☐ पंचलोकपाल पूजन-दशदिक्पाल पूजन
- ☐ इन्द्रध्वज पूजन-सर्वतोभद्रमण्डलस्थापन-पूजन
- ☐ प्रधान देवता स्थापन [सुवर्ण प्रतिमा प्राणप्रतिष्ठा-पूजा]
- ☐ शालग्राम - पूजन - तुलसीपूजा आदि करने के बादः—
- ☐ आगे इस पद्धति में उल्लिखित विधि के अनुसार कार्य करे।

श्रीकृष्ण पूजन

ध्यान—ओम् अनादिमाद्यं पुरुषोत्तमोत्तमं, श्रीकृष्णचन्द्रं निजभक्त वत्सलम्।
स्वयं त्वसंख्याण्डपतिं परात्परं, राधापतिं त्वां शरणं व्रजाम्यहम्॥

आवाहन—ओम् आगच्छ कृष्ण देवेश तेजोराशि जगत्पते।
रुक्मिण्या सह लोकेश त्राहि मां भवसागरात्॥

ओम् चिच्छक्ति जुष्टं सगणं प्रभुं त्वा मावाह्य पूजन मन्दिरेऽस्मिन्।
विलोक्य भक्तिं ममकिंकरस्य श्रीकृष्ण सानिध्य मिहाद्यतेऽस्तु॥

पाद्य—ओम् नन्दनन्दन गोपेश गोपीमण्डल मण्डित।
त्वया चैतत्सुखस्पर्श पाद्यार्घ्यम् प्रतिगृह्यताम्॥

ओम् स्फुरत्प्रभं कांचन रत्न निर्मितं यदर्घ चन्द्रेण च विन्दुना युतम्।
हृत्पद्म तुल्यं विधिवन्मयार्पितं राधापते तुभ्यमिदं शुभासनम्॥

अर्घ—ओम् पूतनादर्प संहारिन् तृणावर्त निषूदन।
विहारेऽनन्त रूपोऽसि गृहाणार्घ्यम् नमोऽस्तुते॥

ओम् औदुम्बरे सुन्दर भाजनेमले रेखांकिते पद्मदलानुकारिणि।
प्रपूरितापाद सुखावहं तदा मयार्पितं पाद्यमिदं गृहाण॥

आचमन—ओम् गंगाजल समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।
आचम्यतां हृषीकेश त्रैलोक्य व्याधिनाशनम्॥

दुग्धस्नान—ओम् क्षीरशायिनि महाविष्णो लक्ष्मीहृदयभाजन।
दुग्धस्नानं गृहाणेदं यथाशक्त्यासमर्पितम्॥

ओम् हृत्कण्ठताल्वोष्ठ गताभिरद्भिः पुनन्ति विप्र प्रमुख क्रमेण।
यस्मादतश्चा चमनार्थमीश! मयार्पिता आप इमां गृहाण॥

दधिस्नान—ओम् दिव्य दुग्धोद्भवं चैतत् दधिपर्यु षितं तथा।
स्नानार्थम् ते मयानीतं तुलसी प्राणवल्लभ॥

घृतस्नान—ओम् घृत दध्युद्भवं नित्यं सर्वेषां चैव पावनम्।
घृतस्नानं गवामीश कुरुष्वेतज्जनार्दन॥

मधुस्नान—ओम् क्षौद्रसर्व रसोपेतं मधुरं सर्वरोगहृत।
इदं मधु प्रयच्छामि तेन स्नानं समाचार॥

शर्करास्नान—ओम् इक्षुरस समुद्भूता शर्करा रुक्मिणी प्रिय।
घनश्याम वपुर्यत्ते तथा संक्षालयाम्यहम्॥

पंचामृतस्नान—ओम् पंचामृतैः शुध्यति पंचभौतिको देहस्तथा शुद्धजलेन सत्वम्।
पंचामृतं स्नानमतो मयार्पितं शुद्धोदकस्नानमिदं गृहाण॥

शुद्धोदकस्नान—ओम् शुद्धोदकं मयानीतं तुलसी चन्दनान्वितम्।
गृहाण देव देवेश वृषभानु सुतापते॥

वस्त्र—ओम् युवासुवासा इति मन्त्रपूर्वकं तड़ित्प्रभं नूतनमम्बर द्वयम्।
तथारुणं कांचन तारकाचितं लक्ष्मीपते तुभ्यमिदं मयार्पितम्॥

ओम् नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णव तारक।
त्रैलोक्य स्वामिने तुभ्यं ददामि वसनं शुभम्॥

वस्त्रान्ते जलम्—ओम् अशुद्धितामेति कटि च्युतेन वस्त्रेण पादान्त जघन्यकायः।
ऊरू च जंघे चरणौ करौ च तत्क्षालये मृज्जल तिस्रवारम्॥

यज्ञोपवीतम्—ओम् ऊर्ध्वं वृतं यत्त्रि वृदप्यधो वृतं पुनस्त्रिवृद् ग्रन्थिविराजितं शुभम्।
यज्ञोपवीतं श्रुति मन्त्रितः कृतं मयार्पितं तत्तद्विधितो गृहाण॥

चंदन—ओम् भाले लसत्केशरमर्पयामि कस्तूरिकाविन्दु मपीन्दु वक्त्र।
श्रीकृष्णगात्रे हरिचन्दनस्य दिव्यांगरागं परितोऽर्पयामि॥

ओम् श्रीखण्डागरुकर्पूर कुंकुमादि विलेपनम्।
भक्त्या दत्तं मया देव दामोदर जगत्पते॥

नानाभरण—ओम् अनेक रत्न खचितं तोडक नूपुरादिकम्।
त्रैलोक्यालङ्कृते कृष्ण गृहाणाभरणानि च॥

रत्नकं मणि वैदूर्यम् मुक्ताहारादिकं तथा।
मनसा सुप्रसन्नेन सर्वम् वै प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प—ओम् सुवर्ण स्वर्णरचितं माणिक्य खचितं शुभम्।
पुष्पं गृहाण देवेश ममोपरि दयां कुरु॥

वनमाला—ओम् सुत्पुण्डरीकैः कणवीरमागधी कदम्ब कैतक्यनुलस्य् शोकजैः।
नानाविधैः पल्लवपुष्पनिर्मितां मालां वनाख्यां विनिवेदयामि॥

फूलमाला—ओम् पादम् शंख जपापुष्पैः शतपत्रैर्वि चित्रताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वर॥

धूप—ओम् धूपं मनोहरं दिव्यं सुगन्धि घ्राण तर्पणम्।
गृह्यतां रुक्मिणीनाथ-राधाधव जगत्पते॥

ओम् सुगन्ध युग्घ्राण सुखावहः सदा धूपोऽपि यस्या कटुतानुभूयते।
मनो यथा त्वच्चरणार्चकानां तं धूपमीशेश समर्पयामि॥

दीप—ओम् लोकान्धकार दर्पघ्नं दीपं सुघृत पूरितम्।
गृहाण जगतांनाथ भक्तानां वाञ्छितार्थद॥

ओम् प्रज्वलित दीप निधाय पात्रे दशायुतं स्नेहयुतं सुनिर्मलम्।
सार्ध त्रिवारं विधुमण्डलीकृतं गृहाण दीपं भगवन्मयार्पितम्॥

नैवेद्य—ओम् व्यतीत यामं नवनीत मेतद् द्राक्षादिरं भासित शर्करां च।
निधाय पर्णे कनकस्यपात्रे दत्तं तु नैवेद्यमिदं गृहाण॥

ओम् अन्नं चतुर्विधं स्वादु भूतानां जीवनं परम्।
नैवेद्यं ते मयादत्तं देवेश प्रतिगृह्यताम्॥

ओम् प्राणाय स्वाहा। ओम् अपानाय स्वाहा। ओम् व्यानाय स्वाहा।
ओम् समानाय स्वाहा। ओम् उदानाय स्वाहा।

आचमन—ओम् मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि।
करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि॥

ताम्बूल—ओम् घोटा सुधैलाक दराहिवल्ली दलैर्युतं श्रीमुख मण्डनार्थम्।
विहारकान्तं नवरंग गर्भम् गृहाण ताम्बूलमिदं मयार्पितम्॥

ओम् पूगानि नागपत्राणि कर्पूर सहितानि च।
मया दत्तानि देवेश श्रीकृष्ण! प्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणा—ओम् हृषीकेश नमस्तेऽस्तु दामोदर नमोऽस्तुते।
१८ साधु पुण्यप्रदा चैव दक्षिणा प्रतिगृह्यताम्॥

प्रदक्षिणा—ओम् ब्रह्माण्ड मेतत् तव देह संस्थितं यतो प्रयासा दनुकूलतां व्रजेत्।
यतो मुनीन्द्रैः परिवर्तितां तां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥

नीराजन—ओम् लक्ष्मीपते परं ब्रह्म व्रतिनां पुण्य वर्धन।
नीराजनं करोम्यद्य श्रीराधा परमप्रिय॥

घंटावादन—ओम् सर्ववाद्यमयीं घण्टां देवदेवस्य वल्लभाम्।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन घण्टानादं करोम्यहम्॥

नीराजन—ओम् मृदंग शंख झल्लरीस ताल वल्लकी स्वनैर्।
गभीरनाद दुन्दुभिर् ध्वनद्वटी घटादिभिः॥
कलिन्द जह्नुनन्दिनी तरंग तुल्य चामरैः।
प्रसन्न दीपकान्तिभिर् निरंजये निरंजनम्॥

ओम् पुराण मन्त्र कीर्तनैर् मनोहरैश्च नर्तनैर्।
मुहुर्मुहुर् जयस्वनैर् नूपुरस्य सिंजितैः॥
महासुगन्धि धूपदः मेघसार दीपतः।
प्रसन्नदीप कान्तिभिर् निरंजये निरंजनम्॥

पुष्पांजलि—ओम् विचित्र पुष्पैर्बहुगन्ध युक्तैर्वनादिदानीं स्वयमाहृतैश्च।
१९ स्वराज्य मेतद् वदता प्लुतेन पुष्पांजलिस्ते भगवन् मयार्पितः।

इत्थं सपर्याम् विधिवद् विधाय गोपांश्च गाश्चैव कलिन्दकन्याम्।
देवांगभूतानि बृहन्मुखानि समर्चयेद् द्वादश काननानि॥

प्रार्थना— ☐ फूल लेकर भगवान् श्रीकृष्ण की प्रार्थना करे—

संसारा दुस्सह व्यालो लेलिहानस्य पृष्ठतः।
धावन्तं पाहि मां कृष्ण कृपालुस्त्वं यतो यतः॥

श्रीराम गोविन्द मुकुन्द कृष्ण, श्रीनाथ विष्णो भगवन् नमस्ते।
प्रौढ़ारि षड्वर्ग महाभयेभ्यो मां त्राहि नारायण विश्वमूर्त्ते॥

प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर।
आधि व्याधि भुजंगेन दष्टं मामुद्धर प्रभो॥

श्रीकृष्णं रुक्मिणीकान्त गोपीजन मनोहर।
संसार सागरे मग्नं दीनं मां परिपालय॥

तदस्तु मे नाथ समूरिभागो भवेऽत्र वाऽन्यत्र तु वा तिरश्चाम्।
येनाहमेको भगवज्जनानाम् भुक्त्वा निषेवे तव पाद पल्लवम्॥

देहः प्रियोऽयं सकलस्य जन्तो देहस्य चाहं कृतिरेव मूलम्।
तस्मात् प्रणामस्य मिषेणदेव! समूलदेहं चरणेऽर्पयामि॥

नमो विश्वस्य रूपाय विश्व स्थित्यन्त हेतवे। विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः॥
नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे। कृष्णाय गोपी नाथाय गोविन्दाय नमो नमः॥
नमः कमलनेत्राय नमः कमल मालिने। नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः॥
वर्हा पीडाभिरामाया रामाया कुण्ठ मेधसे। रमा मानस हंसाय गोविन्दाय नमो नमः॥
कंस वंश विनाशाय केश चाणूर घातिते। वृषभध्वज वन्द्याय पार्थसारथये नमः॥
वेणु वादन शीलाय गोपालायाऽहिमर्दिने। कालिन्दीकूललोलाय लोल कुण्डल धारिणे॥
वल्लवी वदनाम्भोज मालिने नृत्यशालिने। नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय नमो नमः॥
नमः पाप प्रणाशाय गोवर्धन धराय च। पूतना जीवितान्ताय तृणावर्तासु हारिणे॥
निष्कलाया विमोहाय शुद्धायाऽशुद्ध वैरिणे। अद्वितीयाय महते च श्रीकृष्णाय नमो नमः॥
केश क्लेश हरण नारायण जनार्दन। गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव॥

रत्नाकरोहि सदन गृहिणी च पद्मा देयं किमस्ति भवते जगदीश्वराय।
राधागृहीत मनसो मनसोऽस्ति दैन्यम् दत्तं मया निजमनस्तदिदं गृहाण॥

☐ क्रमशः निम्नलिखित मन्त्रों से निम्नलिखित देवताओं का आवाहन करें; पंचोपचार पूजन करें—प्रार्थना करें—

सप्तचिरजीवी पूजन :

आवाहन — ओम् अश्वत्थाम्ने नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् बलये नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् व्यासाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् हनुमते नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् विभीषणाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् कृपाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् परशुरामाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

प्रार्थना — अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
यजमान गृहे नित्यं सुखदाः सिद्धिदाः सदा।
अनया पूजया सप्तचिरजीविनः प्रीयन्तां न मम॥

नर-नारायण पूजन :

आवाहनर — ओम् नर नारायणाभ्यां नमः तावावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

प्रार्थना — ओम् यो मायया विरचितं निजमात्मनीदम्। खे रूपभेदमिव तत् प्रतिचक्षणाय॥

एतेन धर्मसदने ऋषि मूर्तिनाद्य। प्रादुश्चकार पुरुषाय नमः परस्मै॥
सोऽयं स्थिति व्यतिकरोपशमाय सृष्टान्। सत्त्वेन नः सुरगणा ननु मेय तत्त्वः॥
दृश्याद दभ्र करुणेन विलोकनेन। यच्छ्रीनिकेत ममलं क्षिपतारविन्दम्॥
अनया पूजया भगवन्तौ नर-नारायणौ प्रीयेतां न मम॥

वायुदेवता पूजन :

आवाहन — ओम् वायवे सर्वकल्याणकर्त्र्ये नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना — ओम् अन्तः प्रविश्य भूतानि यो विभर्त्यात्म केतुभिः।
अन्तर्यामीश्वरः साक्षात् पातु नो यद्वशे स्फुटम्॥
अनया पूजया सर्वकल्याण कर्त्ता वायुः प्रीयतां न मम॥

गुरु पूजन :

आवाहन — ओम् गुरवे नमः। गुरुमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना — ओम् ब्रह्मा स्थान सरोजमध्य विलसच्छीतां तु पीठस्थितम्।
स्फूर्जत् सूर्यरुचिं वराभयकरं कर्पूर कुन्दोज्वलम्॥
श्वेतस्रग् वसनानु लेपनयुतं विद्युत् रुचाकान्तया।
संश्लिष्टार्ध तनुं प्रसन्नवदनं वन्दे गुरुं सादरम्॥

सरस्वती पूजन :

आवाहन — ओम् सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना — ओम् या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्ड मण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

अनया पूजया सरस्वती भगवती प्रीयतां न मम।।

शेष-सनत् कुमार पूजन :

आवाहन—

ओम् शेषाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् सनत्कुमाराय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् सांख्याय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् पराशराय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् बृहस्पतये नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् मैत्रेयाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् उद्धवाय नमः, तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना—ओम् शेषः सनत्कुमारश्च सांख्यायन पराशरौ। बृहस्पतिश्च मैत्रेय उद्धवश्चात्र कर्मणि।।
प्रत्यूह वृन्दं सततं हरन्तां पूजिता मया। अनया पूजया इमे देवाः प्रीयन्तां न मम।।

पौराणिक पूजन :

आवाहन — ओम् त्रय्यारुणये नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् कश्यपाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् रामशिष्याय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् अकृत व्रणाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् वैशम्पायनाय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
ओम् हारीताय नमः तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना—ओम् त्रय्यारुणिः कश्यपश्च रामशिष्योऽकृत व्रणः।
वैशम्पायनहारीत षड्वै पौराणिका इमे।
सुखदाः सन्तु मे नित्य मनया पूजयार्चिताः।
एतया पूजया षट्पौराणिकाः प्रीयन्तां न मम।।

व्यास पूजन :

आवाहन—ओम् भगवते व्यासाय नमः। व्यासमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना —ओम् नमस्तस्मै भगवते व्यासामित तेजसे। पपुर्ज्ञानमयं सौम्य यन्मुखाम्बुरुहासवम्।।
अनया पूजया भगवान व्यासः प्रीयतां न मम।।

सूर्य पूजन :

आवाहन—ओम् सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

प्रार्थना — ओम् लोकेश त्वं जगच्चक्षुः सत्कर्म तवभाषितम्।

करोमि तच्च निर्विघ्नं पूर्णमस्तुत्वदर्चनात्॥

अनया पूजया सप्ताह यज्ञोपदेष्टा भगवान सूर्यः प्रीयतां न मम॥

दशावतार पूजन :

आवाहन— ओम् मत्स्याय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् कूर्माय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् वराहाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् नरसिंहाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् त्रिविक्रमाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् रामाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् परशुरामाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् कृष्णाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् बुद्धाय नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

ओम् कल्किने नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

प्रार्थना—ओम् मत्स्यं कूर्मं वराहं च नरसिंहं त्रिविक्रमम्।

रामं रामं च कृष्णं च बौद्धं चैव सकल्किनम्॥

गतोऽस्मि शरणं देवं हरिं नारायणं प्रभुम्।

प्रणतोऽस्मि जगन्नाथं समे विष्णुः प्रसीदतु॥

छिनत्ति वैष्णवीं मायां भक्त्या प्रीतो जनार्दनः।

श्वेतदीपं नमत्वस्मान् मयात्मा सन्निवेदितः॥

ओम् वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद् बिभ्रते।

दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते॥

पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते।

म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

लोक पूजन—ओम् अतलं वितलं चैव नितलं सुतलं तथा।

तलातलं रसातलं पातालं पूजयास्यहम्॥

ओम् जनलोकस्तपोलोकः सत्यलोको विराजते।

भूर्भुवः स्वर्लोको महर्लोक इति स्मृतः॥

चतुर्दशलोकान् आवाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

□ पंचोपचार पूजन करे— हाथ में जल लेकर छोड़े कहे—

अनया पूजया चतुर्दशलोकाः प्रीयन्तां न मम।

शुकदेव जी का पूजन :

ओम् व्याससूनवे नमः। तमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि

प्रार्थना—ओम् यं प्रब्रजन्त मनु पेतमपेत कृत्यं, द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस् तं सर्वभूत हृदयं मुनि मानतोऽस्मि॥१॥
स्वसुख निभृत चेतास्तद् व्युदस्तान्यभावो ऽप्यजित रुचिर लीलाकृष्ट सारस्तदीयम्।
व्यतनु त कृपया यस्तत्त्वदीपं पुराणम्, तमखिल वृजिनघ्नं व्याससूनुं नतोऽस्मि॥२॥

पुस्तक पीठ पूजन :

□ पुस्तक पीठ पर "अष्टदल कमल" बनाकर उसकी पूजा करें—

□ निम्न मन्त्र पढ़कर २-२ दाना अक्षत छिड़के—

ओम् आधार शक्तये नमः। ओम् मूल प्रकृतये नमः। ओम् क्षीर समुद्राय नमः।
ओम् श्वेतदीपाय नमः। ओम् कल्पवृक्षाय नमः। ओम् रत्नमण्डपाय नमः।
ओम् रत्नसिंहासनाय नमः।

□ पीठ पर कमल दल के चारों ओर अक्षत छिड़के—

ओम् धर्माय नमः। ओम् ज्ञानाय नमः। ओम् वैराग्याय नमः। ओम् ऐश्वर्याय नमः।

□ पीठ के मध्य भाग पर अक्षत छिड़के—

ओम् अनन्ताय नमः। ओम् महापद्माय नमः।

□ अष्टदल कमल की पंखुड़ियों का पूजन करे अक्षत छिड़के—

१. ओम् आनन्दमय कन्दाय नमः। २. ओम् संविन् नालाय नमः।
३. ओम् प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। ४. ओम् विकृतिमय केसरेभ्यो नमः।
५. ओम् पंचाशद् वर्ण बीज भूषितायै कर्णिकायैनमः। ६. ओम् अं अर्कमण्डलाय नमः।
७. ओम् सं सोम मण्डलाय नमः। ८. ओम् वं वह्नि मण्डलाय नमः।
९. ओम् सं प्रबोधात्मने सत्वाय नमः। १०. ओम् रं रजसे नमः।
११. ओम् तं तमसे नमः।

□ कमल के चारों ओर पूर्वादि आठ दिशाओं में क्रमशः—

पूर्व में—ओम् विमलायै नमः। अग्निकोण—ओम् उत् कर्षिण्यै नमः।
दक्षिण—ओम् ज्ञानायै नमः। पश्चिम—ओम् योगायै नमः।
नैऋत्यकोण—ओम् क्रियायै नमः। उत्तर—ओम् सत्यायै नमः।
वायव्यकोण—ओम् प्रहवचै नमः। ईशानकोण—ओम् ईशानायै नमः।

☐ कमल के मध्य भाग में—

ओम् अनुग्रहायै नमः।

ओम् नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय पद्मपीठात्मने नमः।

☐ पंचोपचार कमल की पूजा करें। ☐ पीठ पर सुन्दर पीला वस्त्र बिछा दे।

☐ खड़ा होकर दोनों हाथ में पुस्तक लेकर—निम्न मन्त्र कहते हुए पुस्तक रख दे,

ओम् ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवा सा पर्वता इमे।

ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामसि॥

☐ इसके बाद पुस्तक पर अक्षत छिड़क कर प्रतिष्ठा करे—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु।

विश्वेदेवा स इह मादयान्तामोम् प्रतिष्ठ॥

☐ पंचोपचार पुस्तक की पूजा कर दे—

गन्ध—श्रीमद् हरिकथासार श्रुतपुण्य प्रवर्धन। पुराण प्रवरं कृष्णं वै गन्धे नार्चया म्यहम्॥

पुष्प—द्वादशस्कन्ध विश्राम रूप प्रेम विवर्धन। नानाख्यान समायुक्त पुष्पाणि प्रददा म्यहम्॥

नैवेद्य—पुराण प्रवर प्रेम्णा भगवद्रूप दर्शक। नैवेद्यं ते प्रयच्छामि संसारार्णव तारक॥

स्तुति—श्रीमद् भागवतं शास्त्रं विष्णुरूपं यदुच्यते। तदहं संप्रवक्ष्यामि विशेषेण सुराऽनघ॥ १॥
धन्यं भागवतं शास्त्रं यस्मिन्भाति जनार्दन। धन्यास्ते वैष्णवा लोके ये शृण्वन्ति कथा मिमाम्॥२॥
यत्र यत्र भवेद्भव्यं शास्त्रं भागवतं कलौ। तत्र तत्र हरिर्या ति शिष्यैः सार्धम् च नारद॥ ३॥
पादादि जानुपर्यन्तं प्रथमं स्कन्धमुच्यते। उर्वादि कटिपर्यन्तं द्वितीय स्कन्धमेव च॥ ४॥
तृतीय नाभिमेवैकं वेदैरुक्तं मनोहरम्। चतुर्थमुदरं प्रोक्तं पृष्ठं कुक्षि समन्वितम्॥ ५॥
तथैव पंचमं स्कन्धं हृदयं समुदाहृतम। बाहुद्वयं तथा कण्ठं षष्ठ स्कन्ध मुच्यते॥ ६॥
सर्वलक्षण संयुक्तं सप्तमं मुख उच्यते। चक्षुद्वयं च श्रीविष्णो रष्टम स्कन्ध मुच्यते॥ ७॥
भृकुटीं च कपोलं च नवम स्कन्धमीर्यते जीवरूपं च दशमं महाविष्णोः परन्तप॥ ८॥
सर्वेन्द्रिय मनन्तार मन एकादश स्मृतम्। परमात्म स्वरूपं च द्वादश स्कन्ध मुच्यते॥ ९॥
एवं सर्वम् भागवतं श्रीहरे रंगमुच्यते। रसिकास्तद्विजानन्ति नान्येषां यद मुत्र हि॥१०॥
श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसंयतम्। तदष्टादश साहस्रं कीर्तितं पापनाशनम्॥
सुरपादपयोः स्कन्धैर्वरै द्वादशभिर्युतः। जगत् त्राणाय हरिणा श्रीमद्भागवतं परम्॥
भुवि प्रकटितं गौरि कारुण्येन दयालुना। तावत् संसार चक्रेऽस्मिन् भ्राम्यतेऽज्ञानतः पुमान्॥
यावत् कर्णगतं नास्ति शुकशास्त्र कथाक्षरम्॥ अनया पूजया तत्र प्रीयतां न सदा मम्॥

☐ अथवा पुरुष सूक्त से पुस्तक की पूजा करे।

नारद पीठ पूजन :

☐ पुस्तक पीठ के बगल ही सफेद वस्त्र बिछा कर दूसरी नारद पीठ स्थापित कहे। नारद पीठ की पूजाकरे।

॥ओम् सुरर्षिवर नारदाय नमः॥

नारद प्रार्थना—ओम् नमस्तुभ्यं भगवते ज्ञान वैराग्य शालिने। नारदाय सर्वलोकाय पूजिताय सुरर्षये॥

□ वक्ता पूजन वरण— सप्ताह कहने वाले व्यास का पूजन करे—

तिलक—ओम् श्रीमद् व्यासाय विप्राय सौम्याय शुकरूपिणे।
गन्धं समर्पयाम्यद्य नमस्तुभ्यं धरासुर॥

अक्षत—ओम् पौराणिक कथा शुद्ध प्रसंगा मोद दायिनम्।
श्रोतृणां मनसा तापं हर्त्तारं प्रणताक्षतम्॥

पुष्प—ओम् हरिगाथामृतानन्द दायिने हृद्यमायिने।
व्यासाय माल्यां च यच्छामि ऋतुपुष्प समन्वितम्॥

□ कुश अक्षत-फूल-द्रव्य-वस्त्र आदि लेकर कथावाचक व्यास का वरण करे।

अद्य शुभ पुण्यतिथौ······ गोत्रः······ नामाऽहम् सर्वेष्टद श्रीमद्भागवत् सप्ताह वक्तृत्वेन गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणम्-एभिः वरण द्रव्यैः भवन्तं वृणे॥

ब्राह्मण कह दे—॥ ओम् वृतोऽस्मि॥

व्यास प्रार्थना □ यजमान हाथ जोड़कर व्यास की प्रार्थना करे—

ओम् यथा परीक्षित सदसि शुको व्यासः प्रकीर्तितः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् व्यासो भव कृपानिधे॥

जप का वरण □ इसके बाद जप करने वाले कम से कम २ ब्राह्मणों का वरण करे।

१. गणेश मन्त्र जप करे। २. द्वादशाक्षर मन्त्र जप करे।

संकल्प—अद्य शुभ पुण्यतिथौ··· गोत्रः··· नामाऽहम् गणेशमन्त्र- द्वादशाक्षरमन्त्र-जपकर्तृत्वेन एभिः वरण द्रव्यैः विभज्य··· गोत्रौ··· ब्राह्मणौ भवन्तौ वृणे।

एक जापक होने पर—अद्य····गोत्रः····नामाऽहम्····मन्त्र जपकर्तृत्वेन एभिः वरणद्रव्यैः····
गोत्रं···· ब्राह्मणं त्वां वृणे।

ब्राह्मण कहे—॥ ओम् वृतोऽस्मि॥

व्यास-आसन की पूजा—ओम् व्यासासनाय नमः। —कहता हुआ पंचोपचार पूजन कर दें।

प्रार्थना—ओम् जयति पराशर सूनुः सत्यवती हृदय नन्दनो व्यासः।
यस्यास्य कमल गलितं वाङ्मय ममृतं जगत् पिवति॥

७ पोर का बास

□ सात गांठ वाले १ बास की स्थापना करे। उसके ऊपर एक लाल डोरा बांध दे।

□ पंचोपचार बास की पूजा कर दे। प्रार्थना करे—

धुन्धकारी यथा वंशे सप्तग्रन्थि समायुते। उषित्वा क्षिप्रमुक्तोऽभूत्पीत्वा भागवतामृतम्॥
तथाऽहं देव मुक्तः स्यां सप्ताह श्रवणेन वै। अनुकम्पय मां नाथ प्रसीद परमेश्वर॥

□ अन्तिम दिन कथा समाप्ति पर उस डोरे को खोल देना चाहिए।

अखण्ड ज्योति

☐ १ कटोरे में घी या तिल का तेल भर कर बत्ती जला दे।

☐ गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़ कर दीप की पूजा करे।

☐ फूल लेकर दीपक की प्रार्थना करे—

शुभं भवतु कल्याण मारोग्यं धनसम्पदः। मम शोक विनाशाय दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप ह्यन्धकार निवारक। इमां मया कृतां पूजां गृहाण परमेश्वर॥

☐ फूल दीपक के सामने छोड़ दे।

☐ दीपक बुझने न पावे—इसकी व्यवस्था कर दे।

वक्ता आसन पर बैठे

☐ इसके बाद वक्ता गणेश जी का ध्यान कर व्यास गद्दी पर बैठे।

☐ यजमान वक्ता पर फूल छोड़कर प्रार्थना करे—

ओम् शुकरूप प्रबोधज्ञ सर्वशास्त्र विशारद। एतत् कथा प्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय।
संसार सागरे मग्नं दीनं मां करुणानिधे। कर्मग्राह गृहीताङ्गम् मामुद्धर भवार्णवात्॥

भागवत पुस्तक पर

☐ १ नारियल, द्रव्य, फूल चढ़ाकर प्रार्थना करे—

ओम् श्रीमद्भागवताख्योऽयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि। स्वीकृतोऽसि मयानाथ मुक्त्यर्थम् भवसागरे॥
मनोरथो मदीयोऽयं सर्वथा सफलस्त्वया। निर्विघ्ने नैव कर्त्तव्यो दासोऽहं तव केशव॥

विनियोग

☐ विनियोग-अंगन्यास-करन्यास आदि करें। ☐ निम्नमंत्र पढ़कर जल छोड़े—

ओम् अस्य श्रीमद्भागवताख्यस्तोत्रमंत्रस्य नारद ऋषिः बृहतीछन्दः श्रीकृष्ण परमात्मा देवता ब्रह्मबीजं भक्तिः-शक्तिः ज्ञान वैराग्य कीलकं मम श्रीमद्भागवत प्रसाद सिध्यर्थे पाठे विनियोगः॥

अंगन्यास—नारदर्षये नमः शिरसि। बृहती छन्दसे नमः मुखे।
श्री कृष्णपरमात्म दैवतायै नमः हृदि। ब्रह्म बीजाय नमः गुह्ये।
भक्तिशक्तये नमः पादयोः। ज्ञान वैराग्य कीलकाभ्यां नमः नाभौ।
श्रीमद्भागवत प्रसाद सिद्ध्यर्थक पाठ विनियोगाय नमः —सर्वाङ्गे ।

करन्यास—ओम् क्लाम् — अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओम् क्लीम् —तर्जनीभ्यां नमः।
ओम् क्लूम् — मध्यमाभ्यां नमः। ओम् क्लैम् —अनामिकाभ्यां नमः।
ओम् क्लौम् — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओम् क्लः —कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

अंगन्यास—ओम् क्लां हृदयाय नमः। ओम् क्लीं शिरसे स्वाहा।

ओम् क्लूं शिखाये वषट्। ओम् क्लैम् कवचाय हुम्।

ओम् क्लौम् नेत्रत्रयाय वौषट्। ओम् क्लः अस्त्राय फट्।

प्रार्थना—ओम् कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वर मौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्॥
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः॥ १॥

अस्ति स्वस्व रुणी कराग्र विगलत् कल्प प्रसूना प्लुतम्॥
वस्तु प्रस्तुत वेणुनाद लहरी निर्वाण निर्व्याकुलम्।
स्रस्त स्रस्त निबद्ध नीवि विलसद् गोपी सहस्रावृतम्।
हस्त न्यस्त नताप वर्ग मखिलो दारं किशोराकृतिः॥ २॥

☐ भागवत माहात्म्य का (संस्कृत में) पाठ—फिर हिन्दी में कथा कहें।

☐ कथा समाप्ति के बाद कीर्तन—उत्तर पूजन तथा आरती करें।

☐ वक्ता स्वयं चरणामृत-तुलसीदल ले तथा यजमान को भी दे।

प्रथम दिन का कार्य समाप्त

☐ **दूसरे दिन से—सात दिन तक सप्ताह होता है।**

☐ नित्य प्रातः सूर्योदय के साथ पूजा तथा सप्ताह पाठ प्रारम्भ करें।

☐ एक दिन का पाठ मध्याह्न तक में पूर्ण करें। २ घड़ी विश्राम कर अपराह्न में उस दिन का कथा कहें, जो सूर्यास्त के समय तक समाप्त हो जाना चाहिए।

☐ आरती-प्रसाद चरणामृत-तुलसीदल का वितरण करें।

☐ ☐ ☐

☐ **प्रतिदिन**—प्रातःकाल बैठकर पवित्र-आचमन-स्वस्तिवाचन-मंगलश्लोक पाठ—

☐ आवाहित देवी-देवताओं की पूजा—प्रधान देवता की पूजा करने के बाद पुस्तक-पूजन तथा कथा-वाचक की पूजा करे।

☐ ☐ ☐

☐ **सप्ताह पूर्ण होने पर—वेदी पूजन विधि के अनुसार—**

☐ हवन-तर्पण-मार्जन-गोदान-पीठदान-शय्यादान १२ ब्राह्मण भोजन आदि करना-कराना चाहिए।

☐ कहीं-कहीं ब्राह्मण दम्पत्ति (जोड़ा) खिलाते हैं। उसे वस्त्र-उपवस्त्र आदि देते हैं। लोकाचार-देशानुसार करें।

☐ सामर्थ्य हो तो-भागवत पुस्तक दान करें।

पुस्तक दान संकल्प—अद्य...... गोत्र...... नामाऽहम् मम- कायिक- वाचिक- मानसिक- सांसर्गिक- ज्ञाताज्ञात समस्त किल्विष क्षयपूर्वक श्रीमद्भागवत महापुराणस्य श्लोकसंख्या वर्णसंख्या मात्रासंख्या वेष्टन पटतन्तु संख्याऽवच्छिन्न स्वर्वासादि- समस्त सुखभोग सिद्धये श्रुति स्मृति पुराणोक्त ज्योतिष्टोमातिरात्रादि फलावाप्तये श्रीलक्ष्मीनारायणानुग्रह संपादनहेतवे...... गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय इदं श्रीमद्भागवतं पुस्तकं विष्णु दैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

सांगता—अद्य कृतैतत् श्रीमद्भागवत पुस्तक दान प्रतिष्ठा सांगता सिद्ध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

प्रार्थना—सर्व विद्याश्रयं ज्ञान करणं ललिताक्षरम्। पुस्तकं संप्रयच्छामि प्रीता भवतु भारती ॥
सरस्वति जगन्मातः शब्द ब्रह्माधिदैवते। अस्य प्रदानात्त्वं प्रीता कृष्ण प्रीतिकरी भव ॥

ब्राह्मण प्रार्थना—व्यास प्रसादात् भवतो मदीया मनोरथाः सन्तु फलाभियुक्ताः।
अस्य प्रदानाच्च हरेः पदाप्तिः सत् पुस्तकस्यात्र नमोऽस्तु तुभ्यम् ॥

टिप्पणी—देशाचार में भगवान की शय्या अलग से दी जाती है।

विशेष □ खीर की आहुति द्वादशाक्षर मन्त्र से दे—

□ दशम स्कन्ध के प्रत्येक श्लोक से अथवा गायत्री मन्त्र से हवन करना चाहिए।

सप्ताह के बीच किस कथा पर क्या चढ़ाना चाहिए—

□ समुद्र मन्थन	—	केसर-कस्तूरी मिश्रित दूध या श्रीखण्ड, दधि, नवरत्न की पुड़िया तथा भगवान का षोडशोपचार पूजन।
□ श्रीकृष्ण जन्म के दिन	—	माखन - मिश्री - मिठाई - ऋतुफल - दूध - दही - शहद - चीनी-घृत - संगीत वाद्य - सामग्री - सिकहर-चाँदी की सीढ़ी।
□ वामन अवतार के दिन	—	सिकहर - कपड़ा - सुपारी - रोली - चन्दन - दण्ड - चाँदी की खड़ाऊँ - चाँदी का कमण्डलु - छाता - जूता - छड़ी - गिलास।
□ श्रीकृष्ण विवाह पर	—	सौभाग्यद्रव्य-सोहाग पेटारी-आभूषण-तुलसी विवाह सविधि करना।
□ श्रीकृष्ण क्रीड़ा में	—	चाँदी का खिलौना
□ गोवर्धन पूजा के दिन	—	नानाप्रकार के मिष्ठान्न-फूलमाला-तुलसी-ऋतुफल - रोली -मौली - धूप - रूई - पान - सुपारी - अबीर बुक्का - वस्त्र - कपूर।
□ रास क्रीड़ा	—	गुड़ियों-गुड्डों का रास बनाना—अनेक तरह के झूलोत्सव बनाना।
□ बाललीला	—	माखन-मिश्री-दूध-मथानी-विलोनी-मथने की रस्सी आदि।
□ उपनयन संस्कार	—	भिक्षापात्र-चाँदी की खड़ाऊँ-भिक्षा का सामान
□ चीरहरण	—	नाना प्रकार के रंग-बिरंगे वस्त्र
□ कंसवध के समय	—	मिट्टी का घड़ा फोड़ा जाता है।

॥ इति श्रीमद्भागवत सप्ताह पूजन विधि ॥

सप्ताह सामग्री

पूजन सामग्री

रोड़ी	—	५० ग्राम।
सूखी पीली हलदी	—	२५ ग्राम।
अबीर बुक्का	—	२५ ग्राम।
सिन्दूर	—	२५ ग्राम।
रंग	—	१-१ पुड़िया चावल रंगने हेतु।

(काला-पीला-लाल-हरा — सर्वतोभद्र बनेगा)

धूपबत्ती	—	२ पैकेट।
कपूर	—	५० पैसे का (नित्य लगेगा)।
रूई	—	बत्ती बनाने हेतु।
पान	—	५० पहले दिन।
सुपारी	—	५० पहले दिन।

पान सुपारी नित्य - ५-५

फूल व फूलमाला - १० प्रतिदिन

तुलसीपत्र नित्य चाहिए

रक्षासूत्र (कलाई नारा)— १०० ग्राम।

चन्दन घिसा हुआ (चढ़ाने हेतु नित्य)

कड़ू तेल— १ पाव (कलश पर दीपक जलाने हेतु नित्य)

सुतली — १ छटांक (बांस वगैरह बांधने हेतु)।

२ माला रुद्राक्ष का— व्यास व जपकर्ता के लिए।

१ आसन जपकर्ता हेतु

जनेऊ— ५ जोड़ा।

पंचामृत	—	दही-दूध-घी-शहद-चीनी-पंचमेवा-तुलसी-सामर्थ्य के अनुसार प्रतिदिन।
पंचमेवा	—	(१) हवन के लिए (२) पंचामृत के लिए (३) प्रधान देवता को चढ़ाने के लिए।
२ गरी गोला	—	प्रधान पीठ तथा भागवत पर चढ़ाने के लिए।
फल	—	५ प्रकार के ऋतुफल, पूजा के लिए प्रतिदिन।
बताशा	—	१ पाव पूजा के लिए।
मिठाई	—	१। पाव प्रधान देवता के लिए
घी	—	दीपक जलाने के लिए नित्य

कपड़ा

सफेद कपड़ा — १ गज चौकी (प्रधान देवता पीठ) पर बिछाने के लिए।

सफेद कपड़ा — १-१ हाथ का ७ टुकड़ा नवग्रह - षोडशमातृका - वास्तुपीठ ६४ योगिनी, सप्तमातृका— घृतमातृका - पीठों के लिए।

लाल टून — १ गज प्रधान पीठ पर चंदवा बाँधने के लिए। आधा गज झंडा बनाने के लिए।

रेशमी कपड़ा लाल या पीला — १। बीता का टुकड़ा प्रतिमा के नीचे बिछाने के लिए।

रेशमी कपड़ा पीला — १। गज प्रधान पीठ कलश पर चढ़ाने के लिए।

कपड़े की ९ झंडी — नवग्रह के लिए रंगी हुई—२ लाल, २ सफेद, १ पीली, २ हरी और २ काली।

१ गद्दा — व्यास गद्दी पर बिछाने के लिए।

१ चदरा — व्यास गद्दी पर बिछाने के लिए।

१ मसनद — व्यास गद्दी पर बिछाने के लिए।

रेशमी कपड़ा लाल — २॥ हाथ पुस्तक के नीचे चौकी पर बिछाने के लिए।

रेशमी पीला कपड़ा — १। गज पुस्तक लपेटने के लिए।

 १ धोती रेशमी — व्यास के लिए । **१ अँगोछा** — व्यास के लिए।

१ दुपट्टा — रेशमी व्यास के लिए।

७ टुकड़ा लाल कपड़ा— १-१ बीता का सप्तलोक हेतु।

७ टुकड़ा पीला कपड़ा— १-१ बीता का सप्तलोक हेतु।

[जपकर्ता के लिए भी धोती-अंगौछा मंगाना चाहिए]।

बरतन

सोने की प्रतिमा — १

१ गगरा — तांबे का प्रधान पीठकलश के लिए

१ कटोरी बड़ी — तांबे की—गगरा के मुख के नाप की।

१ कटोरी छोटी — तांबे की—प्रतिमा रखने के लिए।

१ लोटा — व्यास के लिए।

[जपकर्ता के लिए भी लोटा मंगाना चाहिए]।

पंचरत्नी — सोना-चांदी-तांबा-पीतल-मूँगा—१-१ टुकड़ा चौकी पर गगरा में छोड़ने के लिए।

१ कटोरा — दीपक ज्योति जलाने के लिए।

 १ आचमनी पंचपात्र — व्यास के लिए।

मिट्टी का बरतन

५ गगरी	— ५ कलशों के लिए।	५ पत्तल	— आवश्यकता हेतु।
१० कुल्हड़	— फुटकर कामों के लिए।	१ गमला	— जई बोने के लिए।
५ पियाला	— गगरी के मुख के नाप का।	१० पियाला	— फुटकर काम के लिए।

अन्न

गेहूँ का आटा — १ पाव—चौक पूरने के लिए।

चावल — चावल १-१ पाव काला-पीला-हरा-लाल रंगो में रंग कर सुखा ले सर्वतोभद्र बनाने हेतु।

चावल १ पाव धोकर सुखा ले—सर्वतोभद्र के लिए।

चावल १ पाव रोड़ी या हल्दी में रंग ले— पांचो पीठ पर खाना में भरने एवं पूजा-अक्षत के लिए।

तुलसीवृक्ष का १ गमला तथा तुलसी को पहनाने को वस्त्र।

सप्तधान्य — गेहूँ, जवा-चना-मूंग-सावां-कुकनी-तिल—१०० ग्राम सप्तधान्य के लिए।

जवा— ५ कलशों के पियालों में भरने हेतु। ☐ पीली सरसों २५ ग्राम।

औषधि — (१) कूट (२) जटामासी (३) हरदी (४) दारूहरदी (५) मुर्रा (६) शिलाजीत (७) चंदन (८) वच (९) चम्पक (१०) नागरमोथा—कलशों में छोड़ने के लिए।

नोट — इनके अभाव में सतावर १०० ग्राम ले लेना चाहिए।

पंचगव्य — गौ का—दूध-दही-घी-मूत्र-गोबर—थोड़ा-थोड़ा १ कुल्हड़ (पात्र) में मिलाकर रख ले।

काठ का सामान

१ काठ की चौकी — १ हाथ लम्बी चौड़ी प्रधान देवता के लिए।

१ काठ की चौकी — १॥ हाथ लम्बी चौड़ी भागवत रखने के लिए।

खड़ाऊं — २ जोड़ा व्यास व जपकर्त्ता के लिए।

६ काठ का पीढ़ा — (१) नवग्रह (२) षोडशमातृका (३) सप्तमातृका (४) घृत मातृका (५) ६४ योगिनी (६) वास्तु के लिए।

४ बांस की छड़ी — २-२ हाथ लम्बी चौकी में चन्दवा बांधने के लिए।

९ बांस की छड़ी — १-१ बीता लम्बी नवग्रह की झंडी लगाने के लिए।

१ बांस हरा ताजा — झंडा के लिए १० हाथ का।

१ तखत — व्यासगद्दी के लिए।

४ बांस — तख्त में चांदनी बांधने हेतु

४ बांस की छड़ी — १-१ हाथ की सप्तलोक के लिए

१ बांस ७ पोर (गांठ) का — धुन्धुकारी के लिए।

मिट्टी व जल

गोबर — गौ का गोबर, गौर बनाने तथा हवन वेदी लीपने हेतु।

सप्तमृत्तिका — (१) हाथी (२) घोड़ा (३) रथ (४) गौ के नीचे की (५) वाल्मीकि (विमौर) (६) तालाब (७) चौराहा की

नोट — [अभाव में नदी-संगम की]।

गंगाजल — पूजन व पंचामृत के लिए।

पेड़ की पत्ती

पंचपल्लव — (१) पीपल (२) गूलर (३) पाकड़ (४) आम (५) बरगद—कलशों में छोड़ने हेतु।

आम की पत्ती — वंदनवार बांधने के लिए।

१० केला का पत्ता — चौकी तथा व्यास तख्त में बांधने के लिए।

अन्तिम दिन हवन के लिए

१ सूखा नारियल जटादार बीच में छेद किया हुआ पूर्णाहुति के लिए

१ हाथ लाल टून नारियल में लपेटने को

१ छटांक दही

१ छटांक काली उर्द—दिक्पाल के लिए

५ पूरी हवन के लिए □ खीर हवन के लिए

१५ ईंटा वेदी को

गोबर वेदी लीपने को

गंगा मिट्टी वेदी बनाने को

घी अन्दाज कर

दशांग (हवन सामग्री) ५ पैकेट

शाकल्य — जवा-तिल-चावल-शक्कर-शहद-घी-पंचमेवा आदि मिलाकर।

नोट — कम से कम ५। सेर का हवन होता है उसी हिसाब से शाकल्य तैयार करे।

० सामान्यतः जवा का आधा चावल, चावल का आधा तिल और तिल का आधा शक्कर घी वगैरह प्रचलित है।

शास्त्रों में तिल अधिक कहा गया है। साथ ही अलग-अलग कामनाओं के लिए अलग-अलग विधि है। ब्राह्मण से पूछ लेना चाहिए।

लकड़ी

आम की लकड़ी—हवन के लिए।

नोट—जितना शाकल्य हो, उसी के हिसाब से लकड़ी मंगाना चाहिए।

नवग्रह-लकड़ी—१-१ बीता की ९ पेड़ की लकड़ी— नवग्रह के नाम से हवन के लिए।

[**९ पेड़ का नाम**—मदार-पलाश (छिऊल)-खैर-चिचड़ी-पीपल-गूलर-शमी-दूब-कुशा]

शय्यादान

- शय्यादान के लिए कपड़ा-बरतन-फल-फूल-मिठाई आदि अपनी सामर्थ्य के अनुसार।
- ब्राह्मण दम्पत्ति (जोड़ा) के लिए वस्त्र-उपवस्त्र, सोहागपेटारी आदि।

गोदान

- गौ (सवत्सा) तथा गौ को पहनाने के लिए वस्त्र-आभूषण, घंटा-घंटी, दुहने के लिए बालटी वगैरह।

अन्नदान

- ब्राह्मण भोजन के निमित्त यथाशक्ति अन्न
- यजमान के लिए— १ पीली धोती १ पीला दुपट्टा १ लोटा (जलपात्र) पूजन के लिए